2. न्यायमंत्री

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

1) शिशुपालने अपने घर का दरवाजा क्यो खोल दिया ?

- एक अतिथि को शाम के अंधेरे मे आश्रय के लिए आया देखकर शिशुपाल ने अपने घर का दरवाजा खोल दिया |

2) शिशुपाल किस अवसर की तलाश मे था ?

- शिशुपाल सच्चा न्याय कैसा होता है यह दिखाने के अवसर की तलाश मे था |

3) न्याय के विषय मे शिशुपाल के क्या विचार थे ?

- शिशुपाल मानता था की न्याय ऐसा हो की कोई अन्याय और अपराध करने का साहस न करे सके |

4) परदेशी कोन था ? उसने दूसरे दिन क्या किया ?

- परदेशी स्वयं सम्राट अशोक थे | दूसरे दिन सुबह उठकर परदेशी ने शिशुपाल को धन्यवाद देकर उससे विदा ली |

5) सम्राट अशोक ने शिशुपाल को राजमुद्रा क्यो दी ?

- सम्राट अशोक ने शिशुपाल को न्यायमंत्री के पद पर नियुक्ति के रूप मे राजमुद्रा दी |

6) राज्य मे न्याय के विषय मे परिस्थितिया कैसे बदल गई ?

- शिशुपाल के न्यायमंत्री बनते ही राज्य मे पूरी तरह शांति रहने लगी, किसी को कीसी प्रकार का भय न रहा |

7) पहरेदार की हत्या होने पर शिशुपाल की स्थिति कैसी हो गई ?

- पहरेदार की हत्या होने पर शिशुपाल की नींद उड़ गई और अपराधी का पता लगाने के लीए उन्होने दीन-रात एक कर दीए |

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

8) अपराधी का पता चलने पर शिशुपाल ने क्या किया ?

- अपराधी का पता चलने पर शिशुपाल ने सम्राट अशोक को गिरफ्तार करने का आदेश दिया |

2. विस्तार से उत्तर दीजिए :

1) सम्राट अशोक ने न्यायमंत्री की खोज कैसे की ?

- अपने राज्य को अपराधमुक्त करने के लिए सम्राट अशोक को एक सुयोग्य न्यायमंत्री की खोज के लिए उन्होने एक परदेशी नवयुवक का वेश धारण किया | घूमते-घूमते वे ब्राह्मण शिशुपाल के घर पहुचे | शिशुपाल न्याय-प्रेमी था | न्याय किसे कहते है, वो दिखाने के लीए उसे अवसर की तलाश थी | सम्राट अशोक ने उसे अवसर दिया | हत्या का अपराध होने पर शिशुपाल ने निष्पक्ष व्यवहार किया | उसने सम्राट को मृत्युदंड देने की घोषणा की | उसके इस साहस और निष्पक्ष व्यवहार से सम्राट प्रसन्न हो गए |
- इस प्रकार सम्राट अशोक ने सही न्याययमंत्री की खोज की |

2) सम्राट अशोक ने न्यायमंत्री का पद देते हुए शिशुपाल को क्या दीया ?

- सम्राट अशोक ने शिशुपाल को अपने दरबार मे बुलाया | उन्होने शिशुपाल से कहा को, मै आपको न्याय करने का अवसर देना चाहता हु | शिशुपाल भी इस अवसर के लिए तैयार था | यह जानकर सम्राट ने उन्हे न्यायमंत्री बनाया और पहचानने के लीए उसे राजमुद्रा दी |

3) सम्राट अशोक क्यो गद्-गद हो गए ?

- सम्राट अशोक ने शिशुपाल को न्याय का असली रूप दिखाने का अवसर दिया था | उन्होने देखा की शिशुपाल न्याय की कसौटी पर खरा उतरा था | हत्यारे सम्राट के प्रति उसने जरा भी नरम रुख नही अपनाया | उसने अपराधी सम्राट को मृत्युदंड देने की घोषणा की | दंड देते समय शिशुपाल ने जरा भी हिचकिचाहट नही दिखाई | अपने साहसपूर्ण और निष्पक्ष व्यवहार से उसने सम्राट का दिल जीत लिया |
- इस प्रकार न्यायमंत्री के रूप मे शिशुपाल को सफल होते देखकर सम्राट अशोक गद्गद् हो गए |

4) न्यायमंत्री ने अपराधी सम्राट के जीवन की रक्षा किस प्रकार की ?

- सम्राट अशोक ने एक राजकर्मचारी की हत्या की थी | इस अपराध के लीए न्यायमंत्री ने उन्हे मृत्युदंड की घोषणा की | परंतु अपराधी और कोई नही स्वयं सम्राट थे | शास्त्रो मे राजा को ईश्वररूप माना गया है | इसलिए उसे केवल ईश्वर ही दंड दे सकता है | न्यायमंत्री ने सम्राट की जगह उनकी सोने की मूर्ति को फाँसी पर लटकवा दिया | इस प्रकार न्यायमंत्री ने अपराधी सम्राट के जीवन की रक्षा की |

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

5) न्यायमंत्री निरूतर क्यों हो गए ?

- शिशुपाल न्यायमंत्री की कसौटी पर खरे उतरे थे | सम्राट अशोक ऐसे व्यक्ति को पाकर गद्गद् हो गए | लोगो ने भी शिशुपाल का न्याय सुनकर उसकी जय-जयकार की | परंतु शिशुपाल को लगा की न्यायमंत्री की यह ज़िम्मेदारी उसने नही संभाली जाएगी | उन्होने सम्राट से राजमुद्रा वापस लेने की प्रार्थना की | परंतु अशोक ने कहा की उन्होने अपने न्यायपूर्ण व्यवहार से उनकी आंखे खोल दी है | यह ज़िम्मेदारी उनके सिवाय और कोई नही उठा सकता |
- सम्राट के इस आग्रह को देखकर न्यायमंत्री निरूतर हो गए |

3. निम्नलिखित विधान कौन कहता है ? क्यों ?

1) "यह मेरा सौभाग्य है |"

- यह विधान शिशुपाल अपने द्धारा आए परदेशी युवक से कहता है, क्योकि वह अतिथि का सत्कार करना अपना कर्तव्य समजता है |

2) "दोष निकालना तो सुगम है, परंतु कुछ कर दिखाना कठिन है |"

- यह वाक्य परदेशी युवक शिशुपाल से कहता है, क्योकि शिशुपाल उससे सम्राट अशोक के राज्य मे हो रहे अन्याय की शिकायत करता है |

3) "ब्राह्मण के लिए कुछ भी कठिन नही है | मै न्याय का डंका बजाकर दिखा दूंगा |"

- यह वाक्य शिशुपाल परदेशी नवयुवक से कहता है, क्योकि परदेशी नवयुवक उससे राज्य को अपराधमुक्त करने का वचन लेना चाहता है |

4) "तो तुम अपराध स्वीकार करते हो ?"

- यह वाक्य न्यायमंत्री शिशुपाल सम्राट अशोक से कहता है, क्योकि उसने पहरेदार की हत्या की थी |

5) "महाराज ! यह राजमुद्रा वापस ले लें, मुजसे यह बोझ नही उठाया जाएगा ""

- यह वाक्य न्यायमंत्री शिशुपाल सम्राट अशोक से कहता है, क्योकि उसे लगता है की वह न्यायमंत्री की ज़िम्मेदारी नही संभाल पाएगा |

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

4. विरुद्धार्थी शब्द दीजिए |

1) परदेशी – स्वदेशी
2) आदर – अनादर
3) अपराधी – निरपराधी
4) सुप्रबन्ध – कुप्रबन्ध
5) गिरफ्तार – रिहा
6) स्वीकार – अस्वीकार

5. समानार्थि शब्द दीजिए :

1) अतिथि – मेहमान
2) सुगम - सरल
3) कठिन – मुश्किल
4) हैरान – चकित
5) नि:स्तब्धता – शांति
6) निरुत्तर – खामोश

6. सोचकर बताइए:

1) अगर आप न्यायमंत्री होते तो क्या करते ?

- मैं न्यायमंत्री होता तो वही करता जो शिशुपाल ने किया।

2) सम्राट अशोक की आँखें किस कारण खुल गईं ?

- सम्राट अशोक की आँखें खुल गईं, क्योंकि शिशुपाल ने उसे दिखा दिया कि सच्चा न्याय किसे कहते हैं।

3) शिशुपाल के साहस की सम्राट अशोक ने क्यों प्रशंसा की?

- शिशुपाल ने सम्राट अशोक को पहरेदार की हत्या का अपराधी बताया। उसने सम्राट को मृत्युदंड देने में जरा भी झिझक नहीं दिखाई। उसकी इस निष्पक्षता और निडरता के कारण सम्राट अशोक ने र उसके साहस की प्रशंसा की।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

7. न्यायमंत्री के रूप में शिशुपाल को घोषित करते हुए सम्राट अशोक ने उसे राजमुद्रा दी। इसका अर्थ है -

(अ) मैं आपसे प्रसन्न हूँ।

(ब) आपके न्यायमंत्री होने की यह तनख्वाह है।

(क) यह मेरी ओर से पुरस्कार है।

(ड) यह तुम्हारे न्यायमंत्री होने की पहचान है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in